



# स्कूल का पहला दिन

लेखन - शेरिल राव

स्कूल में आज मेरा पहला दिन है। माँ मेरा हाथ पकड़े हुए हैं, और मेरे साथ चल रही हैं। मैंने माँ से कहा “मैं अब बड़ी हो गई हूँ।” “चलो रहने दो” ये कहते हुए माँ ने मेरा हाथ और कस के पकड़ लिया।

स्कूल के पास बहुत सारे बच्चे हैं। कुछ बस से आते हैं। कुछ कार से आते हैं। कुछ रिक्शे से आते हैं। कुछ साईकल से और कुछ पैदल आते हैं, मेरी तरह। हम फाटक तक पहुँचे। माँ ने मेरा हाथ छोड़ दिया। वो गेट पर रुक गईं। अब मुझे अकेले अन्दर जाना है। मेरे चारों तरफ बहुत से अनजाने चेहरे हैं।

मैं एक कदम चलती हूँ। मैं दूसरा कदम बढ़ाती हूँ। मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ। जैसे मैं आगे बढ़ती जाती हूँ, माँ और छोटी दिखाई देने लगती हैं। कहीं वो गायब तो नहीं हो जाएँगी?



PRATHAM  
BOOKS

A Book in Every Child's Hand



This story has been provided for free under the CC-BY license by [Pratham Books](https://prathambooks.org/). Illustrated by Mayur Mistry.





मैं दौड़कर उनके पास जाती हूँ। अब मुझे नहीं लगता कि, मैं बड़ी हो चुकी हूँ। मैं उनका हाथ पकड़ती हूँ, और कहती हूँ, “मत जाओ!” सभी अंदर जा चुके हैं। सिर्फ मैं बाहर हूँ।

टीचर दीदी बाहर आती हैं। वो मुझे देख मुस्कराती हैं। मैं भी मुस्कराती हूँ। माँ कहती हैं, “रानी जब तुम बाहर आओगी, मैं यहीं मिलूँगी।” मैं उनका हाथ छोड़ देती हूँ। वो हाथ हिलाती हैं। मैं दौड़कर अंदर जाती हूँ। अब मुझे पता है की माँ छुट्टी होने पर मुझे वहीं मिलेंगी।

समाप्त

Click below to follow us:



You Tube

facebook

